मंगलाचरण-१

ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः।
ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः॥

(जोगीरासा)

दिव्य देशना से सुन रक्खा, शास्त्रों से यह जाना।
निज श्रद्धा से सीखा हमने, गुरुओं से पहचाना॥
तीन लोक में तीन काल में, सिद्धों सा ना दूजा।
सो नमोस्तु कर सविनय करते, सिद्धचक्र की पूजा॥१॥ ओम्...
मंगलमय प्रभु मंगलकारी, विघ्न अमंगलहारी।
कामधेनु सम कल्पवृक्ष सम, सर्वसिद्धि दातारी॥
चिन्तामणि सम पारसमणि सम, पारस हमें बनाते।
मुक्तिवधू के प्राण वल्लभा, चित् चैतन्य सजाते॥२॥ ओम्...
आत्म सिद्धि का लक्ष्य साध्य जो, करें सिद्ध की सेवा।
श्रमण चक्र अरिहंत चक्र में, शामिल हो स्वयमेवा॥
वह देवाधिदेव बन जाते, झुकें चरण में देवा।
कर्म नष्ट कर सिद्धचक्र पा, चखते निज का मेवा॥ ३॥ ओम्...
इस विधान से मैनारानी, पति का कुष्ठ मिटाई।
संग सात सौ हुए निरोगी, सबने महिमा गायी॥
निज घर भूले भटके जन को, देता यही सहारे।
सिद्धचक्र के इस वन्दन से, रोग कर्म भय हारे॥४॥ ओम्...
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
सिद्धचक्र को करके नमोस्तु, जग का मंगल होवे॥५॥ ओम्..

(पुष्पांजलिं...)

विधान प्रारम्भ

(दोहा)

अर्हं बीजाक्षर महा, ब्रह्म वाच्य भगवान्।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

(शंभु)

ना द्रव्य मनोहर सँजो सके, ना मुनियों सा मन पावन है।
ना नन्दीश्वर हम पहुँच सके, ना सिद्धालय सा आँगन है॥
हम मैना सम मजबूत नहीं, मजबूर नहीं श्रद्धालु हैं।
सो सिद्धचक्र विस्तार रहे, दुख हरिये आप दयालु हैं॥

(दोहा)

यथाशक्ति से द्रव्य ला, लगा चंदोवा चंद।
मंडप मण्डल रच भजें, सिद्धचक्र स्वानन्द॥

श्री सिद्धचक्रयंत्र पूजन

स्थापना

(हरिगीतिका)

है रेफ ऊपर और नीचे, बीच में हंकार है।
ह्रं बीज अक्षर है कमल सा, अष्ट दल आकार है॥
स्वर और व्यंजन हर दिशा में, संधि पर शुभ तत्त्व हैं।
तट भाग में ओं क्रोम् वेष्टित, ह्रीं शोभित यंत्र है॥

(सोरठा)

भगें कर्म गजराज, सिद्ध यंत्र सिंहनाद सुन।
बनें सिद्ध सरताज, मुमुक्षु ऐसे कर नमन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शंभु)

जिन माँ बाबुल ने जन्म दिया, फिर मरण तुल्य पति दिए वही।
पर मैना भाग्य भरोसे थी, मिथ्या पथ पर पग बढ़े नहीं॥

पति स्वस्थ हुआ श्री जिनवर का, जब गंधोदक का छिड़का जल।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, ले गंधोदक सा श्रद्धा जल॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं...।

ज्यों सत्य वचन बोली मैना, तो पिता चिता सम भड़क उठे।
पति तपित रोग जब शमित हुआ, तो लज्जित होकर पिता झुके॥
गुरु मंत्र मिला फिर सिद्ध यंत्र का, छिड़का शीतल सा चंदन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, कर शान्तीधारा का सिंचन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

उपचार रोग का क्या हो सो, मुनि सिद्धचक्र का कहे यतन।
जो आठ वर्ष तक करना है, त्रय अष्टाह्निक में पाठ भजन॥
पर पहली ही अष्टाह्निक में, वह रोग असाध्य हुआ था क्षय।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, पाने को जिन श्रद्धा अक्षय॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

फूलों सी मैना थी लेकिन, पति और सात सौ थे रोगी।
दुर्गंध न विचलित कर पाई, बस सेवा में थी सहयोगी॥
परवाह नहीं की काँटों की, सो रोग गया तन महक उठे।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, दो धैर्य पुष्प हम झुके-झुके॥

ॐह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

आहार दान कैसे करती, जब नहीं ठिकाना खुद का हो।
फिर भी आहार सदा दे फिर, पति का भोजन फिर खुद का हो॥
निज धर्म नहीं भूली मैना, सो हुई प्रशंसा के काबिल।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, बस मुनि चर्या में हों शामिल॥

ॐह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हैं एक तरफ तो पिता वचन, हैं अन्य तरफ तो धर्म नियम।
जब कुछ ना सूझे मैना को, तो खोज लिए मंदिर भगवन्॥

यह जग तो एक समस्या है, मुनि समाधान सब प्रश्नों के।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, अब लिए सहारे दीपों के॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

अपने-अपने कर्मों से यह, सब दुनियाँ संचालित होती।
जैसी करनी वैसी भरनी, जो बोया वही फसल होती॥
पति पिता पुत्र तो निमित्त हैं, सो मैना करती पाठ भजन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, यह धूप चढ़ा हों कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

हैं पुण्य पाप के खेल यहाँ, कोई महलों में आराम करे।
कोई सुखी दिखे कोई दुखी दिखे, कोई वन-वन भटके काम करे॥
सब समता से मैना सहती, फल कर्मों के हों शीघ्र शमन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, फल अर्पित कर हो सिद्ध गमन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

श्री सिद्धचक्र में श्रद्धा है, पर अष्ट द्रव्य सुविशाल नहीं।
जिन पूजन विधि का ज्ञान नहीं, संगीत गीत सुर-ताल नहीं॥
बस मैना सी दुख दर्द कथा, ना घटे सुखी संसार रहे।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, बस सिद्धों का परिवार मिले॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मण्डल के आठ दिशाओं में अर्घ्य

(विष्णु)

सिद्ध अनाहत वाचक अर्हं, शब्द रहा प्यारा।
स्वयं सिद्ध अक्षरमाला से, खूब सजा न्यारा॥
आधा मात्रिक अर्हं पूजें, पूर्व दिशा आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः पूर्व दिशि अर्घ्यं...॥१॥

वर्ग कवर्ग भजें आग्नेयी, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो आग्नेय दिशि अर्घ्यं...॥२॥

वर्ग चवर्ग भजें हम दक्षिण, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो दक्षिण दिशि अर्घ्यं...॥३॥

वर्ग टवर्ग भजें हम नैऋत, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो नैऋत्य दिशि अर्घ्यं...॥४॥

वर्ग तवर्ग भजें हम पश्चिम, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः पश्चिम दिशि अर्घ्यं...॥५॥

वर्ग पवर्ग भजें हम वायव, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो वायव्य दिशि अर्घ्यं...॥६॥

भजें अनाहत य र ल व, उत्तर दिशि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो उत्तर दिशि अर्घ्यं...॥७॥

भजें अनाहत श ष स ह, ईशान दिशि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो ईशान दिशि अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

सिद्धयंत्र से हम तो भजते, सिद्ध वर्णमाला।
इस आश्रय से मुक्तिवधू की, होती वरमाला॥
सिद्धचक्र के अवसर में हम, शामिल हों आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्पूर्णवर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

सिद्धयंत्र पहले भजें, फिर दूजा हो कार्य।
अतः कहें जयमालिका, करके नमोस्तु आर्य॥

(चौपाई)

सिद्धयंत्र ही महायंत्र है, न्यारा सा जयवंत तंत्र है।
सिद्धचक्र का महामंत्र है, भक्तों का तो मुक्ति मंत्र है॥१॥
सिद्धचक्र में सिद्ध वर्ण हैं, बीजाक्षरमय स्वर व्यंजन हैं।
अतः सर्व सम्पन्न यंत्र है, मंत्र तंत्र का जनक यंत्र है॥२॥
मैना ने पूजा जब इसको, अनुष्ठानमय ध्याया इसको।
गंधोदक जब छिड़का इसका, तभी स्वस्थ पति होता उसका॥३॥
कष्ट मिटा है कुष्ठ मिटा है, सात शतक का रोग मिटा है।
क्योंकि यंत्र तो सिद्धयंत्र है, कार्य सिद्धि का सफल यंत्र है॥४॥
शक्ति प्रदायक सिद्धयंत्र है, पाप व्यसन हर सिद्धयंत्र है।
यश-धन दायक सिद्धयंत्र है, संयम दायक सिद्धयंत्र है॥५॥
दुख संकट हर सिद्धयंत्र है, रोग-शोक हर सिद्धयंत्र है।
मोह कर्म हर सिद्धयंत्र है, धर्म मोक्ष दा सिद्धयंत्र है॥६॥
कर्मों को सिंह सिद्धयंत्र है, मुक्तिवधू दा सिद्धयंत्र है।
मुक्ती का धन सिद्धयंत्र है, नमोस्तु लायक सिद्धयंत्र है॥७॥
सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है, सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है।
सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है, सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है॥८॥

(सोरठा)

सिद्धयंत्र का ध्यान, मंगलमय मंगल करण।
अतः किया गुणगान, नमोस्तु कर पूजे चरण॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(त्रिभंगी)

श्री सिद्धयंत्र से, महामंत्र से, सिद्धचक्र को जो ध्यावें।
वे रोग नशा के, आतम ध्याके, कर्म नशा के सुख पावें॥
हो तुम प्रभु साँचे, जग यश वाँचे, खुश हो नाचें पर्व करें।
सो 'सुव्रत' ध्याएँ, तुम्हें मनाएँ, विद्या पाएँ मोक्ष वरें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

समुच्चय पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र वसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पाएँ, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी सिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

अष्टगुणी जित कर्म हैं, मोक्ष लक्ष्मी धाम।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

(पुष्पांजलिं...)

(लय–पिच्छी रे पिच्छी...)

मुक्ति रे मुक्ति ये तो बता तूने क्या जादू कर डाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥
नहीं अधिक ना कम परमातम, भव सागर के तीरा।
कुंदन सा कंचन झलका के, पाए आतम हीरा॥
सिद्धचक्र को जल अर्पित कर, पाएँ सम्यक् प्याला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

कर्म हरण आनन्द वरण कर, ताप जिन्होंने छोड़ा।
उनकी छाया पाने हमने, नमोस्तु कर सिर मोड़ा॥
सिद्धचक्र को चंदन अर्पित, करें मिटे भव ज्वाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

सिद्ध रमे ज्यों निज में त्यों ही, सब जग आश्रय पाए।
अतः सिद्ध रूपी बनने को, हमने भाव सजाए॥
सिद्धचक्र को पुंज चढ़ाकर, मिले सुखों की शाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कमलाकारी कमल विहारी, ज्यों निर्लिप्त हुए हैं।
ब्रह्मातम के भाव भक्ति से, हमने चरण छुए हैं॥
सिद्धचक्र को पुष्प चढ़ाकर, मिले ब्रह्म जयमाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर के त्यागी निज के रागी, होते आतम स्वादी।
बड़भागी निज रस चखने की, दें पूरी आजादी॥
सिद्धचक्र को चरु अर्पित कर, पाओ भोग विशाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

रोग शोक आतंक दोष हर, ज्यों निज ज्योति जलाई।
भव गलियाँ तज शिव गलियों में, दीपावली मनाई॥
सिद्धचक्र को दीप भेंट कर, अंतस हुआ उजाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

लोकालोक निहारी आतम, क्यों ना हमें निहारो।
अपने जैसे कर्म काटकर, हमको भी तो तारो॥
सिद्धचक्र को धूप भेंट कर, रूप निखरने वाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

तीन लोक के तीन काल के, जो धर्मी संसारी।
वो सब केवल तुमको चाहें, हम तो दास पुजारी॥
सिद्धचक्र को फल अर्पित कर, हो भविष्य ना काला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जड़ चेतन ज्यों अलग किए त्यों, सिद्धचक्र को पाए।
पर जड़ से चेतन पाने हम, अर्घ्य सँजोकर लाए॥
सिद्धचक्र को अर्घ्य चढ़ाकर, खुले मुक्ति का ताला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

पूर्णार्घ्य (नाराच)

विधान सिद्धचक्र का, रचाइये महा महा।
सु सिद्धचक्र के विधान, सा प्रभाव है कहाँ॥
तभी वियोग रोग भीत, भी दिखे नहीं यहाँ।
निजानुभूति प्राप्ति को, महंत भी टिकें यहाँ॥
कि और क्या कहें कथा, विनाश कर्म का करे।
प्रभाव देख भक्ति का, स्वरूप प्राप्ति हो अरे॥
इसीलिए रचा रहे, विधान भक्ति गा रहे।
कि सुव्रती सदैव धर्म, के लिए झुका रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

प्रथम अर्घ्यावली

(विष्णु)

हँसना रोना खाना पीना, मोह की सब माया।
मोहनीय हर प्रभु ने सम्यक्, गुण हीरा पाया॥
मोह त्यागने सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणी मोहनीयकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

ज्ञानावरणी के हर्त्ता ही, प्रभु ज्ञानानन्दी।
पर व्यवहार नयों से जानें, निश्चय स्वानन्दी॥
ज्ञानोदय को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुणी ज्ञानावरणीकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

कर्म दर्शनावरणी हरकर, सब कुछ देख लिया।
निजदृष्टा के दर्शन को तो, माथा टेक लिया॥
सिद्ध दर्श को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुणी दर्शनावरणीकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥३॥

निज से निज में मिल बैठे हैं, अन्तराय हर्त्ता।
अतुलवीर्य से विघ्न विनाशी, निज ज्ञातादृष्टा॥
विघ्नहरण को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुणी अन्तरायकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

नाम कर्म जब मिटा दिया तो, रूपी का क्या काम।
बने अरूपी सूक्ष्म स्वरूपी, छोड़ दिया जग धाम॥
नाम मिटाने सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुणी नामकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

आयु कर्म की तोड़ शृंखला, अवगाहन पाए।
जिस से भिन्न-भिन्न होकर भी, नन्त समा जाएँ॥
हरे आयु सो सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुणी आयुकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

गोत्र कर्म जब नहीं रहा तो, ऊँच नीच से क्या?
अगरुलघु गुण पाकर पाया, गुरुकुल सिद्धों का॥
गोत्र त्यागने सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुणी गोत्रकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

नहीं असाता न हो साता, वेदनीय जब ना।
अव्याबाध सिद्ध सुख भोगें, जिसमें बाधा ना॥
वेदनीय हर सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्वगुणी वेदनीयकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं॥ ८॥

पूर्णार्घ्य

तुम अविनश्वर हम क्षणभंगुर, क्या नाते अपने।
फिर भी तुमसे मिलने के हम, सजा रहे सपने॥
स्वप्न पूर्ति को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी अष्टकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

द्वितीय अर्घ्यावली

(विष्णु)

सम्यग्दर्शन पाकर जिसने, विश्वशान्ति चाही।
विनय मोक्ष का द्वार रहा यह, मुक्तिवधू दायी॥
दर्शनविशुद्धि-विनय भाव से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि-विनयसम्पन्नतागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

दोष रहित व्रत शील धारकर, आत्म शील पाते।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना, भव्य जीव भाते॥
आत्मशील से ज्ञान झील पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचार-अभीक्ष्णज्ञानोपयोगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

भवतन भोग विराग धार कर, गुण संवेग धरे।
अपनी शक्ति बिना छुपाए, जो जन त्याग करे॥
यह संवेग धार बन त्यागी, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं संवेग-शक्तितस्त्यागगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

अपनी शक्ती बिना छुपाए, करें तपस्या जो।
साधु समाधि के साधन से, हरें समस्या वो॥
करके तप वा साधुसमाधि, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप-साधुसमाधिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

रोगी संतों की सेवा कर, वैयावृत्य करें।
अर्हत् भक्ति करके अर्हत्, बनने भाव करें॥
वैयावृत्ती जिनभक्ति से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं वैयावृत्य-अर्हत्भक्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

गुरु आचार्य भक्ति को करके, होते कार्य सफल।
उपाध्याय गुरु के वन्दन से, पाते मोक्ष महल॥
गुरु आचार्यभक्ति बहुश्रुत से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

धर्म प्रकाशक शास्त्र ज्ञान की, प्रवचन भक्ति करें।
यथा काल आवश्यक करके, निज कर्तव्य धरें॥
प्रवचनभक्ति आवश्यक कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-आवश्यक-अपरिहाणिर्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

प्रभावना जिनशासन की हो, यही साधना हो।
धर्मी से गो-बछड़े जैसा, प्रेम भावना हो॥
प्रभावना कर प्रेमभाव से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-प्रवचनवत्सलत्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

हम हैं बिंदु तुम हो सिन्धु, मेल हमारा हो।
सो सोलह गुण के आश्रय से, तुम्हें पुकारा हो॥
अगर चाहते कुछ देना तो, निज-निज दो आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशभावनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं..।

तृतीय अर्घ्यावली

ज्ञान में चेतन ध्यान में चेतन, चेतन चेतन में।
भावशुद्धि को कर डाला सो, चेतन दर्शन में॥
परम शुद्धचैतन्य सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं परमशुद्धचैतन्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

आजू चेतन बाजू चेतन, है आगे पीछे।
द्रव्य-भाव-नोकर्म हरा तो, चेतनमय जीते॥
शुद्ध बुद्ध चैतन्य सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धचैतन्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

ज्ञान परम पारिणामिक जो, शुद्ध ज्ञान धारा।
शुद्ध ज्ञान कर शुद्ध ज्ञान से, निज को शृंगारा॥
शुद्ध ज्ञान अविकारी पाने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

चेतन रूप जगत में सुन्दर, है सर्वांग सुखी।
जड़ में ऐसा रूप नहीं क्यों, पर में रहो दुखी॥
आवागमन जगत का तजने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धचिद्रूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

शुद्ध स्वरूप तत्त्व का प्यारा, मिश्रण से बहुरूप।
जड़ चेतन ज्यों अलग हुए तो, बनते सिद्ध स्वरूप॥
जड़ पुद्गल के भोग त्यागने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

भाव कर्म जब पूर्ण नशे तो, पाते शुद्ध स्वभाव।
सिद्धशिला अविनाशी पाकर, मिले मुक्ति की छाँव॥
सिद्धचक्र के भाव बनाकर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

निराकार उपयोग शुद्धि से, शुद्ध करें अवलोक।
नजर लगे ना जिन्हें हमारी, सिद्धों का वह लोक॥
निज के अवलोकनकर्त्ता को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्ध-अवलोकनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

बने वज्र सम अचल मेरु सम, सकल शुद्ध दृढ़ हो।
कितनी आँधी संकट आए, टस से मस ना हो॥
लोकशिखर के अविचल धामी, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धदृढ़गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

हम तो एक जमीं के कण तुम, त्रय जग के स्वामी।
अक्ष बिना अध्यक्ष हमें दो, छाया वरदानी॥
अपने में अब हमें मिला लो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं शुद्ध सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

चतुर्थ अर्घ्यावली

अवधिज्ञान से प्रज्ञाश्रमणी, भेद अठारह जान।
फिर भी आतम के आनन्दी, बने सिद्ध भगवान॥
बुद्धि ऋद्धि को नमोस्तु करके, केवली हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धियुक्तसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

अणिमा से तो कामरूप तक, ग्यारह भेदों से।
दूर हुए हैं साधक ऋषिवर, मिलते सिद्धों से॥
ऋद्धि विक्रिया को नमोस्तु कर, कष्ट टलें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धियुक्तसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

जल से लेकर अग्नि मार्ग जो, नव विहार करते।
ब्रह्म विहार किए तो जल्दी, मुक्तिवधू वरते॥
क्रिया ऋद्धि को नमोस्तु करके, हों मंगल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं चारण(क्रिया)ऋद्धियुक्तसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

उग्र तपों से अघोरब्रह्म तक, सात भेद धरते।
फिर भी आत्मानन्दी बनकर, चिदानन्द चखते॥
तपो ऋद्धि को नमोस्तु करके, सुव्रत हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं तपऋद्धियुक्तसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

मनो वचन तन बल तीनों से, ध्यान पाठ तप हो।
किंतु थकें ना साधक स्वामी, वरण करें निज को॥
बल ऋद्धि को नमोस्तु करके, दृढ़ता हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं बलऋद्धियुक्तसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

औषध के आठों भेदों से, हरें व्याधि सारी।
उपाधियों के त्यागी करते, जिन समाधि प्यारी॥
औषधि ऋद्धि को नमोस्तु कर, स्वस्थ हुए आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धियुक्तसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

आशिर्विष से सर्पिस्रावी, षट् रस की ऋद्धि।
दया सिन्धु जब हमें दान दें, तभी हुई सिद्धि॥
रस ऋद्धि को नमोस्तु करके, दिव्य दर्श आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं रसऋद्धियुक्तसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ७॥

गुण अक्षीणमहानस आलय, क्षेत्र ऋद्धि जो दो।
कटक पेटभर रहे साथ में, यही कृपा कर दो॥
अक्षीण ऋद्धि को नमोस्तु कर, सिद्ध छाँव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अक्षीणऋद्धियुक्तसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८॥

पूर्णार्घ्य

बुद्धि क्रिया और विक्रिया, तप बल औषध भी।
रस अक्षीण आठ मिलकर हों, पूरे चौसठ ही॥
इन अनमोल रत्न को भज हों, ऋद्धि-सिद्धि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि-ऋद्धिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

पंचम अर्घ्यावली

कृत कारित अनुमोदन वाली, खूब योजनाएँ।
पूर्ण न हों तो अज्ञानी कर, खूब भरे आहें॥
सिद्धों सम तीनों को त्यागें, मिले क्षमा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं कृत-कारित-अनुमोदनारूप आस्रव रहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

क्रोध मान माया लोभों की, सभी कषायों को।
करके त्याग चेतना ध्यायें, निज के भावों को॥
सिद्धों जैसी त्याग कषायें, मिले दया आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं क्रोध-मान-माया-लोभरूप आस्रव रहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

मनो वचन काया वाली सब, त्याग क्रियायों को।
शुद्ध चेतना में रम बैठे, पाए स्वभावों को॥
सिद्धों सम मन वचन काय तज, हो करुणा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं मन-वचन-कायरूप आस्रव रहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

तज समरंभ समारंभारंभ, सभी कार्य त्यागे।
आकुलता व्याकुलता तजने, हम पीछे भागे॥
पापों के आरंभ त्यागकर, ताप टले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं समरंभ-समारम्भ-आरंभरूप आस्रव रहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

नरक रूप परवशता तजकर, आत्म सहारे हो।
शुद्ध स्वयंभू को अम्बर भू, रोज पुकारे हो॥
विघ्न विनाशक सिद्ध स्वयंभू, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धस्वयंभूगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

योगी हो पर योग नहीं सो, परम शुद्ध योगी।
नहीं वियोगी ना संयोगी, शुद्ध आत्म भोगी॥
अपने योगी सहयोगी को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धपरमयोगी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

लख चौरासी के जन्मों को, यथाजात छोड़े।
शुद्धजात सो बन बैठे वो, हम तो सिर मोड़े॥
हुए दिगम्बर सिद्ध निरम्बर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धजातगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

अब तक हमने तपे नहीं तप, तप ने हमें तपा।
सम्यक् तप के महा तेज से, तुमने ताप तपा॥
दुख संकट उपसर्ग विजेता, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धतपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

कृत कारित अनुमोदन त्यागें, चार कषायें भी।
संरम्भादिक तीन योग तज, आतम ध्यायें जी॥
पापास्रव तज सिद्ध शुद्ध को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं निरास्रव गुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

षष्ठम अर्घ्यावली

जहाँ देखिये वहीं विश्व में, पाँच ज्ञान छाये।
ज्ञान बिना तो स्वयं चेतना, कुछ ना कर पाए॥
ज्ञान आवरण हरे केवली, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

राज दर्श चाहें पर द्वारी, हमें न करने दें।
यों ही अनन्त दर्शन से जो, वंचित रखे हमें॥
नवों-दर्शनावरणी हर कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

खड्गधार पर लगी शहद को, चखना रसना से।
सुख-दुख के इन जगत रसों ने, निज के रस नाशे॥
वेदनीय की हरे वेदना, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

चंचल वानर मदिरा पी हो, गाफिल पर गाफिल।
मोही माया यों होगी तो, सुखी न हो मंजिल॥
मोहनीय अठबीस त्याग के, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

जिसके कारण साँकल जैसे, जीव बँधे रहते।
चार आयु के अनन्त बंधन, भव-भव में सहते॥
आयु कर्म हर निज अवगाही, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं आयुकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

चित्रकार सम रंग बिरंगी, करे चित्र रचना।
इन्हें देख चेतन मत नचना, इनसे नित बचना॥
नामकर्म के सभी भेद हर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

जिसके कारण ऊँच-नीच कुल, संसारी पाते।
फँसे गोत्र में होतृ करें क्या, बन्धन ही पाते॥
कुम्भकार सम गोत्र कर्म तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

जिससे विघ्न उपस्थित होते, अच्छे कर्मों में।
पाँचों भेद न रुकने देते, सम्यक् धर्मों में॥
भण्डारी सम अन्तराय तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

द्रव्य भाव नोकर्म त्यागकर, बने जितेन्द्रिय जो।
उनके मोक्षमार्ग पर चलकर, भक्त अतीन्द्रिय हों॥
कर्मों के दुख-बंधन हर्त्ता, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहित अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

सप्तम अर्घ्यावली

घाति कर्म के पूर्ण विजेता, नेता शिवपथ के।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, रसिया निज रस के॥
जो छ्यालीस मूलगुण धरकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

शान्त राग अणुओं से निर्मित, पुरुष शरीरा हो।
जिन्हें रुचा ना सो पा बैठे, शुद्ध शरीरा को॥
नमः नमः सिद्धेभ्यः भजकर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं सिद्ध सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

अरिहंतों सिद्धों के अनुचर, गुरु आचार्य रहें।
शिक्षा दीक्षा दें जिनमार्गी, आतम कार्य करें॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं आचार्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

नग्न दिगम्बर धर्म धुरंधर, पिच्छि कमण्डल ले।
द्वादशांग श्रुत की नैया से, भव के पार चले॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं उपाध्याय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

सम्यग्दर्शन की विद्या ले, ज्ञान हिमालय हैं।
जिन चारित्र समय सुव्रतमय, जो सिद्धालय हैं॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं साधु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

जड़ कर्मों के खेल खिलौने, कठपुतली सम हम।
हम जड़मूरत तुम चिन्मूरत, शुद्धमूर्ति हो तुम॥
अनेकांत जिनधर्मी स्वामी, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धमूर्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

इन्द्री जन्य पराश्रित सुख तज, आत्मिक सुख पाया।
पापों की व्याकुलता त्यागे, शुद्ध करे काया॥
आगम से आतम को पाए, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धसुखगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

कर्माश्रित है जगत अपावन, सिद्धचक्र पावन।
जग की पावन बस पावन पर, आप शुद्ध पावन॥
सिद्ध चैत्य को चैत्यालय में, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धपावनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

श्री अरिहंत सिद्ध आचारज, उपाध्याय साधु।
श्री जिनधर्म जिनागम प्रतिमा, मंदिर निज स्वादु॥
नव देवों को सिद्ध स्वरूपी, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहित अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अष्टम अर्घ्यावली

ज्ञान और दर्शन उपयोगी, चेतन लक्षण हों।
परम शुद्ध उपयोग सिद्ध के, मिश्रित अपने हों॥
त्याग शुभाशुभ आदि-दिव्य को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धोपयोगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

भोगी हो पर भोग नहीं हैं, जड़ चेतन सारे।
निजानुभूति निज रस भोगें, शुद्ध भोग प्यारे॥
स्थविष्ट को इष्ट सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धभोगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

बहिरातम अंतरआतम तज, शुद्ध परमआतम।
अतः शुद्ध आतम कहलाते, खोजें भव्यातम॥
महा महा-अशोक गुणधारी, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धात्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

एक बार ज्यों कर्म अलग हों, आतम सिद्ध बनें।
भेद मिटें सब खेद मिटें सब, भक्त प्रसिद्ध बनें॥
परमपूज्य श्री वृक्षादिक को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धपरमात्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

घाति नशा फिर हरे अघाती, शुद्ध सिद्ध नामी।
शुद्ध हुए गर्भस्थ स्वयं में, सिद्धचक्र स्वामी॥
सिद्ध महामुन्यादि बने जो, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धगर्भगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

'सव्वे सुद्धा हु सुद्ध णया' से, भेद न कुछ दीखे।
पर व्यवहार सिद्ध पद पाने, भक्ति पाठ सीखे॥
पूज्य असंस्कृत रूप सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धवासगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

शान्त दूध में मिले मलाई, छाँव दिखे जल में।
ऐसे ही प्रभु शुद्ध शान्त हैं, सिद्धों के दल में॥
परमपूज्य वृहदादि सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धशान्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

जग में किसी तरह की उपमा, जिनकी हो न सके।
उपमातीत शुद्ध निरूप वे, रूपी हो न सके॥
सिद्ध त्रिकाली दिग्वासी को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धनिरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

दूर हुए जो देह बाण से, कामबाण जीते।
करके समाधि निर्वाणी रस, आतम का पीते॥
नंतशक्तियाँ नंतगुणी को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं शुद्धनिर्वाणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

महासमुच्चय पूर्णार्घ्य

(दोहा)

शब्द छन्द ना कह सकें, सिद्ध गुणों के कोश।
सिद्धचक्र की भक्ति से, मिटें विश्व के दोष॥

(ज्ञानोदय)

सिद्धचक्र की पूजा करके, गूँगे स्वर भरने लगते।
लँगड़े पर्वत पर चढ़ जाते, अंधे जग लखने लगते॥
अभुज सिंधु से पार उतरते, आधि व्याधि संकट टलते।
मंत्र जाप कर होम हवन कर, कर्म कटें आतम खिलते॥
सिद्धचक्र करने वालों को, बस यों आशीर्वाद मिले।
भोज्य पाँच सौ अस्सी विध के, षट् रस तज निज स्वाद मिले॥
मिलें न जब तक सिद्धचक्र में, सिद्धचक्र तब तक पूजें।
जिनशासन 'विद्या' गुरुवर को, नमोस्तु 'सुव्रत' के गूँजें॥

(सोरठा)

दो हजार चालीस, वृहद् रूप से पूजते।
चौंसठ लें लघु अर्घ्य, नमोस्तु के स्वर गूँजते॥
गुण कहना सम्यक्त्व, मोक्षतत्त्व दे दान जो।
अतः भक्ति कर भक्त, 'सुव्रत' पर प्रभु ध्यान दो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद- प्राप्तये महासमुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

महासमुच्चय जयमाला

(दोहा)

भक्त आत्म कर्तव्य कर, मुक्ति लक्ष्य को साध्य।
ऋद्धि सिद्धि निज शान्ति को, सिद्धचक्र आराध्य॥

(ज्ञानोदय)

जिनशासन में सिद्धचक्र की, महिमा जग विख्यात रही।
जिसमें मैना रानी वाली, कथा कहानी ज्ञात रही॥
रोग शोक दुख कर्म हरण को, सिद्धभक्ति पथ साँचा है।
आओ! मैना का यश वाँचें, जो गुरुओं ने वाँचा है ॥१॥

निपुणसुंदरी पहुपाल की, थीं दो प्यारी कन्याएँ।
सुरसुन्दरी मैनासुन्दरी, धर्मपंथ सब अपनाएँ॥
पितु ने कन्याओं से पूछा, बोलो तुम किसका खाती?
सुरसुंदरी कहे आपके, महाभाग्य का मैं खाती ॥२॥

मैना मैं ना खाऊँ आपका, अपने भाग्य का मैं खाती।
क्रोधित लज्जित मैना से हो, कलुषितु हुई पितु की छाती॥
बात गई पर एक बाग में, राजा को श्रीपाल मिले।
कुष्ठरोग से पीड़ित थे पर, धार्मिक थे खुशहाल मिले ॥३॥

उसे देख राजा ने सोचा, इससे ब्याह रचाना है।
भाग्य भरोसे मैना को भी, कुछ तो सबक सिखाना है॥
रानी मंत्री समझाये पर, राजा ने जिद ना छोड़ी।
मैना-कोढ़ी की लख जोड़ी, आँखों ने धारा छोड़ी ॥४॥

यदि दुर्भाग्य हुआ तो सुन्दर, पति कोढ़ी हो जाएगा।
यदि सौभाग्य हुआ तो कोढ़ी, कामदेव हो जाएगा॥
मुनिवर ने उपचार बताया, सिद्धचक्र का करो यतन।
त्रय शाखा की अष्टाह्निक में, आठ वर्ष तक करो भजन ॥५॥

यथाशक्ति से मैना रानी, सिद्धचक्र का भजन करे।
सिद्धयंत्र शान्तिधारा का, गंधोदक सब पर छिड़के॥

हाँ! पहले ही सिद्धचक्र में, सबका कुष्ठ समाप्त हुआ।
पति ने तनिक कनिष्ठा में रख, सबका वापिस गमन हुआ ॥६॥

निपुणसुन्दरी ने ज्यों देखा, मैना-पति सुंदर प्यारा।
तो वह बोली शायद मैना, छोड़ चुकी पति दुखियारा॥
और किसी के साथ इसी ने, अपना ब्याह रचा डाला।
लोक-लाज को पिता-वचन को, इसने दूषित कर डाला ॥७॥

तब श्रीपाल कुष्ट दिखलाते, तो माँ पश्चाताप करे।
मैना रानी पहुँच राज्य में, सिद्धचक्र का पाठ करे॥
तब श्रीपाल देह में लगता, कामदेव हों आ धमके।
सिद्धचक्र में नाम तभी से, मैना रानी का चमके ॥८॥

सिद्धचक्र के न्हवन हवन का, प्रभाव भय दुख रोग हरे।
और कहें क्या अधिक भक्ति से, मुनिपथ दे भव कर्म हरे॥
कुशल राज्य संचालित करके, मुनि दीक्षा श्रीपाल धरे।
यथाजात अरिहंत सिद्ध बन, मोक्ष सुन्दरी प्राप्त करे ॥९॥

अनन्तकेवली भी मिलकर के, सिद्धों के गुण कह न सकें।
'सुव्रत' फिर भी सिद्ध भक्ति बिन, इस जीवन में रह न सकें ॥
वैसे तो निष्काम भक्ति है, फिर भी यदि देना चाहें।
तो सिद्धों सम मुक्ति मिले तो, हम सिद्धों के हो जाएँ ॥१०॥

(सोरठा)

है मुश्किल यह बात, ताराओं को गिन सकें।
अपनी क्या औकात, सिद्धचक्र के गुण कहें॥
फिर भी कर गुणगान, हमने की है अर्चना।
बनें सिद्ध भगवान, 'सुव्रत' की ये प्रार्थना॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो महा-समुच्चय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो कर्मचक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वो सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(शांतये शांतिधारा... पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

(दोहा)

बीना वर्षायोग में, दीवाली त्यौहार।
शांति छाँव इक दिन रचा, सिद्धचक्र सत्कार॥
दो हजार तेबीस को, सोम तेर तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचें, गुरु प्रभु को नत शीश॥

❑ ❑ ❑

स्तुति-१

श्री सिद्धचक्र का पाठ, करो दिन आठ, ठाठ से प्राणी।
हो विश्वशान्ति कल्याणी॥
ज्यों फल पाई मैना रानी, श्रीपाल बने मुक्ती धामी।
त्यों फल पाएँ हम काटें कर्म कहानी, हो विश्व...॥१॥
जिनशासन पर विश्वास करें, मिथ्यात्व त्याग संन्यास धरें।
आदर्श बनाएँ हम गुरु वा गुरुवाणी, हो विश्व...॥२॥
अब ज्ञाता दृष्टा बनने को, निज से निज में निज मिलने को।
निष्काम बनें शिव शुद्धातम के ध्यानी, हो विश्व...॥३॥
हम विषय कषाय विकार हरें, अज्ञान पाप अँधयार हरें।
सो रोग शोक आतंक दूर हों स्वामी, हो विश्व...॥४॥
भय विघ्न अमंगल टल जाएँ, मंगलमय मैत्री सब पाएँ।
मुनि 'सुव्रत' पाएँ गुरु की सिद्ध निशानी, हो विश्व...॥५॥

❑ ❑ ❑